आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 25-12-14

अपने सहज ज्ञान और सहज याद से हम मनुष्यों को लक्ष्मी-नारायण जैसा सर्व-गुण समप्पन, सोलेकला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी दैवी-देवता बनाने वाले, पतित-पावन, बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - अपने लक्ष्य और लक्ष्य-दाता बाप को याद करो तो दैवी-गुण आ जायेंगे, किसी को दुख देना, ग्लानि करना, यह सब आसुरी लक्षण हैं.

हम आत्मा ये जब सतयुग के आरंभ में परमधाम से यहॉ पार्ट बजाने आते है तभी हम सब सर्व-गुण समप्पन, सोलेकला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी ही होते हैं. हमारे में सभी दिव्य-गुण और दैवी-गुण होते है. सतयुग-त्रेतायुग में हम आत्मा ये देही-अभिमानी होकर पार्ट बजाते है तो हमारे में कोई विकार नहीं आता है फिर भी दिव्य-गुण और दैवी-गुणों में थोड़ी मात्रा में कमी जरूर होती है, जिसे ही कहा जाता है कि आत्मा १६ कला से १४ कला में आती है. द्वापर से आत्मा ये देह-अभिमान में आती है तो आत्मा में विकारों की प्रवेशता होती हैं. अभी कलियुग के अन्त में आत्मा सम्पूर्ण विकारी (जीरो कला) बन जाती है तब बाप आते है और संगमयुग प्रारंभ होता है. बाबा हमें राजयोग सिखलाते है और फिर से मनुष्य से देवता बनने का रास्ता बतलाते है.

हमारा बाबा, ज्ञान का सागर, दिव्य-गुणों का सागर और सर्वशक्तिमान हैं. उन्हें ज्ञान-सागर का टाइटिल मिलता है क्योंकि उन्हें सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान है. उन्हें ही दिव्य-गुणों का सागर कहा जाता है क्योंकि उन-में आत्मा के ओरिजिनल दिव्य-गुणों का भंडार है. वैसे ही उन-में परमातम शक्तिओं का भी भंडार है इसलिए उनको सर्वशक्तिमान कहा जाता हैं. बाबा से हम योग में यही दिव्य-गुणों और आत्मिक शक्तिओं को हमारे में भरते है जिसे की आत्मा दैवी-गुण धारण करने लायक यहॉ बनती हैं.

पहले समझे के क्या हैं आत्मा के ओरिजिनल दिव्य-गुण, दैवी गुण और आसुरी गुण.

आत्मा के ओरिजिनल दिव्य-गुण -- ज्ञान, पवित्रता, शांति, सुख, आनंद, प्रेम और शक्ति

आत्मा के दैवी गुण -- संतुष्टता, धैर्यता, रमणीकता, नियमितता, सत्यता अथवा प्रमाणिकता, हिम्मत, मृदुता, परोपकारिता...और भी बहुत हैं.

आत्मा के आसुरी गुण -- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्षा, द्वेष, में-मेरा पन, ज्यादा जोर से बोलना, किसी को दुखी होते देख खुश होना...लिस्ट लंबा हैं.

आज की मुरली में बाबा ने कहा हमें अपने घरों में, ऑफिस में और अपने पाकेट में लक्ष्मी-नारायण का फोटो (बाबा ने जो बनवाया है) जरूर रखना हैं. लक्ष्मी-नारायण के फोटो को देखने से हमें अपना लक्ष्य और लक्ष्य दाता बाप दोनों याद आयेंगे. यही विधि है हमारी आत्मा में दैवी-गुणों का फिर से संचार करने की. जब हम लक्ष्मी-नारायण को देखते है तो हमारे मन में यह जरूर आता है कि बाबा हमें इनके जैसा बना रहे हैं. हमारा मन बाबा की बहुत-बहुत महिमा करता है, धन्यवाद देता है कि शुक्रिया बाबा शुक्रिया, आपका लाख-लाख शुक्रिया. हम कैसे थे और आप हमें क्या से क्या बनाते हों. ऐसे ही जितना हम अपने लक्ष्य को और लक्ष्य दाता को याद करते जायेंगे उतना ही हमारे चेहरे-चलन में दैवी-गुण आते जायेंगे. हमारे मित्र-सम्बन्धी सब हमारे बदले हुए स्वभाव-संस्कार को देख कर चकित हो जाते है. यह तो पहले कैसा (विकारी) था और अब क्या हो गया!

दैवी-गुण स्वयं में धारण करने के लिए चार मुख्य बातों का पुरुषार्थ हमें अभी करना हैं.

१. अपने मन-वचन-कर्म से किसी को भी दुख नहीं देना हैं या किसी की भी ग्लानि नहीं करनी हैं. ऐसे ही किसी को दुखी हो देख कर स्वयं को भी दुखी नहीं बना देना हैं. ना किसी को दुखी करना हैं, ना किसी से दुखी होना हैं.

२. अपने संग की बहुत संभाल करनी हैं. बाबा बताते है जैसा संग वैसा रंग. अगर हमारा संग विकारी आत्माओं से होगा तो हमारे में परिवर्तन होना मुश्किल हैं. इसलिए विकारी आत्माओं से किनारा करना हैं.

३. सर्व से गुण-ग्राही बनना हैं. हमारे सामने कैसी भी आत्मा आये, लेकिन स्वयं की स्थिति ऐसी हो हमें उस आत्मा के गुण ही दिखाई दें. अगर में ने किसी भी आत्मा का कोई भी अवगुण देखा, तो वह अवगुण हमारे में आ जायेंगे. इसलिए हमें स्वयं की स्थिति ऐसी बनानी हैं की हमें सदा दूसरों में गुण ही दिखाई दें. सर्व के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखनी ही हैं.

४. हमारे में जो भी अवगुण हैं, उसको पहचान कर, हर रोज़ उसका चार्ट बनाना हैं और देखना हैं की हमारे में से वह अवगुण दिन-प्रतिदिन कितना कम होता जाता हैं. हर बार कोई एक अवगुण ही निकाल ने की प्रैक्टिस करनी हैं. जैसे बाबा ने बताया की हमें स्वयं की माया से संभाल करनी हैं, क्योंकि जैसे हम स्वयं से अवगुण निकालने का पुरुषार्थ करते हैं तो माया भी डबल जोर से वार करती हैं. लेकिन हमारे में प्रबल निश्चय हो की कैसे भी करके मुझे ये अवगुण निकालने ही हैं. तो सफलता जरूर हुई पड़ी हैं.

ॐ शांति.